भारत सरकार
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 4053
बुधवार, 12 अगस्त, 2026 को उत्तर दिए जाने के लिए

दक्षिण-पश्चिम मानसून पूर्वानुमान

†4053. श्री नवीन जिंदल:

क्या **पृथ्वी विज्ञान** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) वास्तविक वर्षा वितरण की तुलना में अब तक के वर्ष 2026 के दक्षिण-पश्चिम मानसून पूर्वानुमान के सटीकता मूल्यांकन संबंधी ब्यौरा क्या है;
(ख) इस वर्ष अल नीनों परिघटना ने इसे किस हद तक प्रभावित किया है तथा इसके संभावित निहितार्थों का ब्यौरा क्या है; और
(ग) इस सीजन में पूर्वानुमान से सबसे बड़ा विचलन दर्ज करने वाले मौसम संबंधी उप-मंडलों का ब्यौरा क्या है तथा इसके संभावित निहितार्थों का तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
(डॉ. जितेंद्र सिंह)

(क) भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने दिनांक 13 अप्रैल 2026 को 2026 दक्षिण-पश्चिम मानसून ऋतु के लिए अपना प्रथम चरण दीर्घ अवधि पूर्वानुमान जारी किया, जिसमें सामान्य से कम मौसमी वर्षा का पूर्वानुमान व्यक्त किया गया, जो कि दीर्घ अवधि औसत (एलपीए) का 92% है। इसे द्वितीय चरण के पूर्वानुमान में अद्यतित करके एलपीए का 90% कर दिया गया था, साथ ही अल नीनो स्थितियाँ बनने का अनुमान व्यक्त किया गया। इन पूर्वानुमानों के अनुरूप, जून में सामान्य से 35% कम वर्षा दर्ज की गई, जिसमें 70% जिलों में सामान्य से कम वर्षा रही। यद्यपि, मध्य भारत में मजबूत वर्षा के कारण जुलाई में अखिल भारतीय पैमाने पर एलपीए से 1% अधिक वर्षा दर्ज की गई, परंतु उल्लेखनीय स्थानिक असमानताएं बनी रहीं, जिसमें 47% जिलों को न्यूनता या बड़ी-न्यूनता वाली वर्षा का सामना करना पड़ रहा है। 2 अगस्त 2026 तक, कुल मौसमी वर्षा एलपीए की तुलना में 12 प्रतिशत कम रही है, जो अपेक्षित अंतर-मौसमी भिन्नताओं के बावजूद आईएमडी के आरंभिक मौसमी पूर्वानुमानों के अनुरूप ही है।

(ख) पूर्वानुमान के अनुसार, जून 2026 में भूमध्यरेखीय प्रशांत क्षेत्र में कमजोर अल नीनो की स्थिति बनी तथा तीव्र होकर मध्यम स्तर की हो गई, जो कि देश भर में मानसून के बहाव को कम करने वाले एक प्रमुख बड़े पैमाने वाले जलवायु कारक का कार्य किया। इस घटना ने अगस्त के पूर्वार्द्ध तक कुल 12 प्रतिशत संचयी न्यूनात और व्यापक क्षेत्रीय वर्षा न्यूनता में योगदान दिया, जिससे 47 प्रतिशत जिले प्रभावित हुए। इन अल नीनो स्थितियों के कारण पड़ने वाले प्रमुख प्रभावों में लंबे समय तक सूखा पड़ना, स्थानीय मौसमी सूखा, मिट्टी में कम नमी, और अति-वर्षा वाली फसलों पर और जलाशय स्तर पर नमी के कारण पड़ने वाला तनाव शामिल है। आईएमडी इन जलवायु कारकों की लगातार निगरानी करता है और आपदा तैयारी और कृषि संबंधी योजना बनाने में संबंधित मंत्रालयों और राज्य सरकारों की सहायता के लिए अद्यतन परामर्शिकाएं जारी करता है।

(ग) दिनांक 5 अगस्त 2026 तक कुल वर्षा के डेटा का अध्ययन करने पर विभिन्न सब-डिवीजनों में उल्लेखनीय स्थानिक अंतर पाया गया। 16 सब-डिवीजनों में वर्षा की महत्वपूर्ण कमी (सामान्य की तुलना में 20 के 38 प्रतिशत तक की कमी) दर्ज की गई, जिसमें बिहार (-38 प्रतिशत), अरुणाचल प्रदेश (-36 प्रतिशत), असम और मेघालय (-35 प्रतिशत), तटीय आंध्र प्रदेश और यनम (-35 प्रतिशत), लक्षद्वीप (-33 प्रतिशत), पंजाब (-33 प्रतिशत), रायलसीमा (-32 प्रतिशत), पूर्वी उत्तर प्रदेश (-30 प्रतिशत), झारखंड (-30 प्रतिशत), हरियाणा, चंडीगढ़ और दिल्ली (-26 प्रतिशत), केरल और माहे (-22 प्रतिशत), पूर्वी मध्य प्रदेश (-22 प्रतिशत), पूर्वी मध्य प्रदेश (-22 प्रतिशत), पूर्वी राजस्थान (-22 प्रतिशत), नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम और त्रिपुरा (एनएमएमटी) (-21%), तटीय कर्नाटक (-21%), और दक्षिण आंतरिक कर्नाटक (-20%) आदि शामिल हैं। वर्षा की कमी वाले क्षेत्रों को संभावित फसल तनाव और कम जल भंडारण का सामना करना पड़ता है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) लगातार सब-डिवीजनल अलर्ट प्रदान करता है, ताकि केंद्रीय और राज्य एजेंसियों द्वारा अग्र-सक्रिय जोखिम प्रबंधन में मार्गदर्शन किया जा सके।

*****